Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

UGA–121

B.A. (Part–II) DUE Ist Year Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - II

(कथा साहित्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) 'एक जमीन अपनी' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता बताइये।

   (ii) चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में प्रत्येक नारी का क्या कर्त्तव्य बताया है ?

   (iii) 'स्नेहबंध' कहानी किन सम्बन्धों पर आधारित है ?

(iv) 'अकेली' कहानी की पात्र सोमा बुआ अपने अकेलेपन को कैसे दूर करती थी ?

(v) 'मधुआ' कहानी से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

(vi) 'लहना सिंह' किस कहानी का प्रसिद्ध पात्र है ?

(vii) कहानी के प्रमुख तत्वों के नाम लिखिए।

(viii) हिन्दी का प्रथम उपन्यास किसे माना जाता है ?

(ix) 'रेत की कोख' कहानी में भारत के किस प्रदेश का वर्णन किया गया है ?

(x) गुलजी के मन की सबसे बड़ी आकांक्षा क्या थी ?

खण्ड–ब

निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** अवतरणों की प्रसंग सहित **200** शब्दों में व्याख्या कीजिए।

2. मैं वैवाहिक व्यवस्था को दो व्यक्तियों को साथ और आत्म सम्मानपूर्वक साझेदारी के रूप में देखती हूँ। जो ये स्त्री स्वतंत्रता के मापदण्ड पश्चिमी है ..... हमारे संस्कृति, हमारे सामाजिक परिवेश के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। ये भ्रम वहीं टूट रहे हैं ..... दोहरे शोषण से गुजर रही है वहाँ की स्त्री ..... खैर यह बहस कभी खत्म नहीं होने की ..... मैं तो विशेष रूप से इस बात को रेखांकित करना चाहती हूँ कि स्त्री मर्द बनकर समाज में समानता चाहती है, स्त्री बने रहकर क्यों नहीं ? स्त्रीत्व के गुणों को बरकरार रखते हुए.....संघर्ष का यह गलत मोड़ है नीतू! चेतने की जरूरत है स्त्री को स्त्रीत्व से मुक्ति नहीं चाहिए, उन रूढ़ियों से मुक्ति चाहिए जिन्होंने उसे पशु बना रखा है।.....

3. बुढ़ापा बहुदा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा न थी और न ही अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई सहारा न था। समस्त इन्द्रियाँ, नेत्र, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पड़ी रहती और घर वाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता था उसका और परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो ये रोने लगती थी। उनका रोना सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़ फाड़कर रोती थी।

4. व्यक्ति अपने अन्दर के अकेलेपन और खालीपन को भरने के लिए घर की दीवारों की घुटन को छोड़कर बाहर भागता है पर अकेलापन बाहर और अधिक उजागर हो उठता है। वह उम्र का भी अकेलापन है और परिस्थितियों का भी। शायद यही नियति है एक अकेले आदमी की। जहाँ मन की शांति अँधेरों और रोशनी दोनों में ही बौखलाई फिरती है। वह बहुत देर से अकेली बैठी, लगता है उसे किसी का इंतजार है भी और नहीं भी। क्या कोई भी उनकी मन:स्थिति समझ सकता है ? वह जानती है—70 पार की जिन्दगी सिर्फ बोनस होती है जिसके एक-एक पल को पकड़कर शिद्दत से जीने का मन करता है किन्तु दुनिया उसे फालतू सामान समझकर उपेक्षित कर देती है।

5. स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है—'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गये। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक हलाली का मौका आया है पर सरकार ने हम तिमियों की एक घघरिया पलटन क्यों न बना दी जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती ? एक बेटा है। फौज में भरती हुए एक ही बरस हुआ है। उसके बाद चार और हुए, पर एक ही नहीं जिया। सूबेदारनी रोने लगी ..... 'अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन ताँगे वाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़ों की लातों में चले गये थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्त पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।

6. औरतें ही शब्दों की जननी हैं, वे हमेशा विश्लेषण ही करती हैं ..... चले गये के किये हुए या सुने हुए कामों का विश्लेषण। जब कोई मर जाता है, लोग कितना झूठ बोलते हैं। हालाँकि कायरों के लिए यही एक टाइम होता है सच बोलने का। अब कोई तुम पर हमला नहीं कर सकता। पर न जाने क्यों मौत को वे महिमा मंडित करते हैं। औरतें एक-दूसरे से शिकायत कर रही हैं कि अब तो मिलना सिर्फ किसी के जन्म लेने, शादी और मरने तक सीमित हो गया है। कोई काम नहीं फिर भी फुरसते नहीं हैं। इनकी दुनिया कितनी छोटी है, जिन्हें खींच-खींचकर वे बड़ा करना चाहती हैं। च्युंगम की तरह जैसे ही बड़ा होता है फट जाता है।

7. 'कल। देखते नहीं यह रेशम का कढ़ा हुआ सालू।' लड़की भाग गई। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिनभर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और गोभी वाले के ठेले में दूध उँडेल दिया। सामने से नहाकर आती हुई किसी वैष्णवीं से टकराकर अन्धे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।

8. किसने ऐसे सुकुमार फूल को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की ? आह री नियति! तब इसको लेकर मुझे घर-बारी बनना पड़ेगा क्या ? दुर्भाग्य जिसे कभी मैंने सोचा भी न था। मेरी इतनी माया-ममता-जिस पर, आज तक केवल बोतल का ही पूरा अधिकार था—इसका पक्ष क्यों लेने लगी ? इस छोटे से पाजी ने मेरे जीवन के लिए कौनसा इन्द्रजाल रचने का बीड़ा उठाया है ?

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **500** शब्द)।

9. उपन्यास किसे कहते हैं ? हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

10. अंकिता 'एक जमीन अपनी' उपन्यास की न केवल एक पात्र है अपितु जीवन को अनुशासन से जीने वाली नारी है। इस कथन के आधार पर अंकिता की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

11. डॉ॰ सत्यनारायण की कहानी 'रेत की कोख' का सार अपने शब्दों में लिखिए।

12. 'अकेली' कहानी की प्रमुख पात्र सोमा बुआ की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।